स्वर -॥ ⇒ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

आ ई ऊ → दीर्घ स्वर संधि

अर् ए, ओ → गुण स्वर संधि

ऐ औ → वृद्धि स्वर संधि

इ | ई | उ | ऊ | ऋ + असमान स्वर

य् व् र्

→ यण् स्वर संधि

ए | ऐ | ओ | औ + स्वर

अय् | आय् | अव् | आव्

→ अयादि स्वर संधि

ए
अ + इ
अय् य्

ओ
अ + उ
अव् व्

① दीर्घ स्वर संधि -

अ | आ + अ | आ - आ
इ | ई + इ | ई - ई
उ | ऊ + उ | ऊ - ऊ

यदि अ | आ के बाद समान स्वर अ | आ ही आ जाए तो दीर्घ 'आ' हो जाता है, और यदि इ | ई के बाद समान स्वर इ | ई आ जाए तो दीर्घ 'ई' हो जाता है, तथा उ | ऊ के बाद समान स्वर 'उ | ऊ' ही आ जाए तो दीर्घ 'ऊ' हो जाता है-

'अ | आ + अ | आ - आ'

कोमल + अंगी - कोमलांगी, दाव + अनल - दावानल

आ

आ

दिव्य + अस्त्र - दिव्यास्त्र स + अवधान - सावधान

आ

आ

प्राधिकरण - प्र + अधिकरण, प्रसंगानुकूल - प्रसंग + अनुकूल

आ

आ

'अ + आ = आ'

आर्य + आवर्त - आर्यावर्त, गुरुत्व + आकर्षण - गुरुत्वाकर्षण

आ आ

तुषार + आवृत - तुषारावृत, प्रेम + आसक्त - प्रेमासक्त

आ आ

शयनागार - शयन + आगार, कंटकाकीर्ण = कंटक + आकीर्ण

आ आ

'आ + अ = आ'

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन, द्राक्षा + अवलेह - द्राक्षावलेह

आ

आ

पुरा + अवशेष - पुरावशेष, मालविकाग्निमित्र - मालविका + अग्निमित्र

आ

आ

मुक्तावली - मुक्ता + अवली, श्रद्धांजलि - श्रद्धा + अंजलि

आ

आ

'आ | आ - आ'

कारा + आवास – कारावास, भाषा + आबद्ध - भाषाबद्ध

आ आ

वार्ता + आलाप - वार्तालाप, कृपा + आकांक्षी = कृपाकांक्षी

आ आ

महाशय – महा + आशय, प्रेक्षागार – प्रेक्षा + आगार

आ आ

* 'प्रेक्षागार' शब्द में संधि है -

(i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) दीर्घ और गुण संधि (iv) दीर्घ और यण् संधि

* 'व्यवस्थानुसार' शब्द में सन्धि है -

(i) दीर्घ संधि (ii) यण् संधि (iii) यण् और दीर्घ संधि (iv) गुण संधि

वि + अवस्था + अनुसार

इ → य्

आ